सिंचाई एवं
सिंचाई की आवश्यकता

सिंचाई

वर्षा के अभाव में फसलो के सफल उत्पादन एवं पौधों की वृद्धि तथा मृदा में पर्याप्त नमी बनाये रखने के लिए कृत्रिम रूप से पानी देने की क्रिया को सिचाई कहते है।

सिंचाई की आवश्यकता

- मानसून वर्षा की अनिश्चितता
- वर्षा की अनियमितता
- वर्षा का असमान वितरण
- मानसून विभंगता
- वर्षा ऋतु की सीमित अवधि
- तेज वर्षा
- अधिक जल चाहने वाली फसले

सिंचाई जल का समुचित प्रयोग

1. सिचाई कब की जाये।
2. सिचाई कितनी की जाये।
3. सिचाई किस प्रकार की जाये।

पौधों के बाहरी लक्षण

- पत्तियों का रंग गहरा हरा हो जाना।
- पत्तियों का कुंचित होना।
- पत्तियों का दोपहर में मुरझाना।

पौधों की क्रांतिक अवस्था

भूमि में प्राप्य जल की मात्रा :

- मृदा का भार लेकर जल की मात्रा ज्ञात करना
- पृष्ठ तनावमापी द्वारा
- मौसम की भौतिक दशाओ के आधार पर भूमि में प्राप्य जल के ह्रास को जानना।

सिंचाई जल का समुचित प्रयोग :

1. सिचाई कब की जाये ।
2. सिचाई कितनी की जाये ।
3. सिचाई किस प्रकार की जाये ।

- खेत समतल तथा ढालुदार होने चाहिए
- सिचाई की नालियां पक्की तथा खरपतवार रहित
- क्षेत्र तथा भूमि के अनुसार सिचाई करने की विधियों का चयन करना चाहिए।